



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दोना 2 मार्च 22	28.5.21	2	7-8

डॉ. रामधन सिंह की बासमती चावल की 370 किस्म की बढौलत आज भारत सबसे बड़ा निर्यातक: वीसी कृषि वैज्ञानिक स्व. डॉ. रामधन सिंह की याद में एचएयू में कार्यक्रम

भास्कर न्यूज़ | हिसार

स्वर्गीय रॉव बहादुर डॉ. रामधन सिंह द्वारा देश के खाद्यान्न उत्पादन में अभूतपूर्व योगदान देने के लिए उन्हें आज भी बड़े सम्मान के साथ याद किया जाता है। हरियाणा और पंजाब राज्यों में हरित क्रांति अवधि के दौरान अनाज के उत्पादन और उत्पादकता में जो उपलब्धियां प्राप्त की गईं। वह उनके द्वारा स्थापित फसल सुधार कार्यक्रमों की मजबूत नींव के कारण ही संभव हो सका है। ऐसे महान वैज्ञानिकों और उनके योगदान को भुलाया नहीं जा सकता।

ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर.काम्बोज ने कहे। वे विश्वविद्यालय में ऑनलाइन माध्यम से आयोजित सुप्रसिद्ध कृषि वैज्ञानिक स्वर्गीय रॉव बहादुर डॉ. रामधन सिंह की याद में आयोजित एक कार्यक्रम में बतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि साधारण किसान परिवार में जन्म लेने वाले इस महान वैज्ञानिक ने भारत ही नहीं दुनिया के लिए विभिन्न फसलों की नई किस्में इजाद कर अलग पहचान बनाई। एक पौध प्रजनन वैज्ञानिक के रूप में उनकी उपलब्धियां बहुत अधिक हैं। उनके द्वारा तैयार की गई बासमती चावल की 370 किस्म की



स्वर्गीय रामधन सिंह की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित करते वीसी व अन्य।

बढौलत आज भारत बासमती चावल का सबसे बड़ा निर्यातक है। डॉ. रामधन सिंह ने अपने जीवन में गेहूँ, चावल, जौ तथा दलहनों की 25 उन्नत किस्मों की विकसित किया जिनके परिणामस्वरूप भारतीय उपमहाद्वीप में खाद्यान्न उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि हुई। मुख्यातिथि ने डॉ. रामधन सिंह की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि दी। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि सीमेट एशिया रीजनल रिप्रेजेंटेटिव व बोर्लॉग इंस्टीट्यूट फॉर साउथ एशिया के मैनेजिंग डायरेक्टर डॉ. अरूण कुमार जोशी ने डॉ. रामधन सिंह द्वारा कृषि क्षेत्र में दिए गए अभूतपूर्व योगदान की जानकारी देते हुए उनके द्वारा विकसित की गई विभिन्न किस्मों से अवगत कराया। उन्होंने बताया कि देशी गेहूँ की किस्म जिसे खाने में सबसे स्वादिष्ट माना जाता है, सी-306 के जनक भी डॉ. रामधन सिंह ही हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि न्यूज	28.5.21	9	4-8

आयोजन

वीसी बोले, महान वैज्ञानिक ने हरित क्रांति के अग्रदूत के रूप में पहचान दिलाई

हकूवि कुलपति बीआर काम्बोज ने ऑनलाइन माध्यम कार्यक्रम में दी जानकारी

खाद्यान्न उत्पादन में डॉ. रामधन सिंह का योगदान अतुलनीय : काम्बोज

हरि न्यूज ॥ हिसार

पौधों से भावनात्मक रूप से जुड़े

काम्बोज ने कहा कि वैज्ञानिकों तथा विद्यार्थियों को उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए। उनकी याद में मार्गदर्शन के लिए विश्वविद्यालय में रामधन सिंह फार्म की स्थापना भी की गई है। उन्होंने युवा वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे पौधों से भावनात्मक रूप से जुड़कर उनकी देखभाल करें और उनमें बदलते मौसम व जलवायु के अनुसार आने वाले हर बदलाव का बारीकी से अध्ययन कर गई किस्मों को ईजाद करें।

कही। उन्होंने कहा कि साधारण किसान परिवार में जन्म लेने वाले इस महान वैज्ञानिक ने भारत ही नहीं दुनिया के लिए विभिन्न फसलों की नई किस्में ईजाद कर अलग पहचान बनाई। एक पौध प्रजनन वैज्ञानिक के रूप में उनकी अनेक उपलब्धियां हैं। उनके द्वारा तैयार की गई बासमती

चावल की 370 किस्म की बदौलत आज भारत बासमती चावल का सबसे बड़ा निर्यातक है। डॉ. रामधन ने जीवन में गेहूं, चावल, जौ तथा दलहनों की 25 उन्नत किस्मों को विकसित किया जिनसे भारतीय उपमहाद्वीप में खाद्यान्न उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि हुई।

दुनिया भर में अलग पहचान : डॉ. जोशी

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि सीमेंट एशिया रीजनल रिप्रेजेंटेटिव व बोरलॉग इंस्टीट्यूट फॉर साउथ एशिया के मैनेजिंग डायरेक्टर डॉ. अरूण कुमार जोशी ने बताया कि देशी गेहूं की किस्म जिसे खाने में सबसे स्वादिष्ट माना जाता है, सी-306 के जनक भी डॉ. रामधन सिंह ही हैं। इसके अलावा संसार में मशहूर बासमती चावल 370 और झोना- 349 भी उनकी देन है। उन्होंने कहा कि डॉ. रामधन सिंह की दुनियाभर में बेहतरीन विभिन्न

फसलों की किस्में विकसित करने वाले वैज्ञानिक के रूप में अलग पहचान है। अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने बताया कि वे 20 अप्रैल 1977 को इस संसार को अलविदा कह गए लेकिन सबको जिंदा रहने के लिए अथाह अनाज भंडार दे गए। उन्होंने कहा कि डॉ. रामधन सिंह कृषि अनुसंधान एवं विकास की कई समितियों के सदस्य रहे। वह विश्वविद्यालय प्रबंधक बोर्ड के सदस्य भी रहे। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता एवं रामधन सिंह चेयर के कन्वीनर डॉ. एके छाबड़ा ने कार्यक्रम में भाग लेने वालों का आभार जताया।

देश के खाद्यान्न उत्पादन में अभूतपूर्व योगदान देने के लिए स्वर्गीय राँव बहादुर डॉ. रामधन सिंह को बड़े सम्मान के साथ याद किया जाता है। हरियाणा और पंजाब राज्यों में हरित क्रांति अवधि के दौरान अनाज के उत्पादन और उत्पादकता में जो उपलब्धियां हासिल हुईं वह रामधन सिंह के स्थापित फसल सुधार कार्यक्रमों की मजबूत नींव के कारण संभव हो सका है। यह बात हकूवि कुलपति बीआर काम्बोज ने ऑनलाइन माध्यम से आयोजित कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमृत समाज	28.5.21	4	6-8

खाद्यान उत्पादन में योगदान देने के लिए डॉ. रामधन को किया याद, वीसी बोले डॉ. रामधन की तैयार 370 किस्म की बदौलत देश बना बासमती चावल का सबसे बड़ा निर्यातक

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। स्वर्गीय राव बहादुर डॉ. रामधन सिंह देश के खाद्यान उत्पादन में अभूतपूर्व योगदान देने के लिए याद किया जाता है। हरियाणा पंजाब में हरित क्रांति अवधि के दौरान अनाज के उत्पादन उत्पादकता में उनकी अमूर्त उपलब्धियां रही। उनकी ओर से स्थापित फसल सुधार कार्यक्रमों की मजबूत नींव के कारण ही संभव हो सका है।

यह बात चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बीआर कांबोज ने ऑनलाइन माध्यम से आयोजित कृषि वैज्ञानिक स्वर्गीय डॉ. रामधन सिंह की याद में आयोजित एक कार्यक्रम में बतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे। कुलपति ने कहा कि डॉ. रामधन द्वारा



हकृवि के कुलपति प्रो.बीआर कांबोज व अन्य पुस्तक का विमोचन।

तैयार की गई बासमती चावल की 370 किस्म की बदौलत आज भारत बासमती चावल का सबसे बड़ा निर्यातक है। उन्होंने गेहूं, चावल, जौ तथा दलहनों की 25 उन्नत किस्मों को विकसित किया। विश्वविद्यालय में रामधन सिंह फार्म की स्थापना भी की गई है। कार्यक्रम के दौरान विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा लिखित एक पुस्तक का भी विमोचन किया गया।

अनुसंधान निदेशक डॉ. एस्के सहरावत ने बताया कि वे 20 अप्रैल 1977 को इस संसार को अलविदा कह गए लेकिन सबको जिंदा रहने के लिए अथाह अनाज भंडार दे गए। रामधन सिंह चेयर के कन्वीनर डॉ. एके छाबड़ा ने उनकी उपलब्धियों के बारे में जानकारी दी। मंच का संचालन सहायक अधिष्ठाता डॉ. सुरेंद्र कुमार पाहुजा ने किया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दिनांक 28/5/21	28/5/21	3	6-8

खाद्यान्न उत्पादन में योगदान के लिए याद किए जाते हैं स्वर्गीय रामधन सिंह : प्रो. काम्बोज



कार्यक्रम के दौरान स्वर्गीय रामधन सिंह की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित करते मुख्यातिथि प्रोफेसर बीआर काम्बोज एवं अन्य। • पीआरओ

जागरण संवाददाता, हिसार: स्वर्गीय राव बहादुर डा. रामधन सिंह द्वारा देश के खाद्यान्न उत्पादन में अभूतपूर्व योगदान देने के लिए उन्हें आज भी बड़े सम्मान के साथ याद किया जाता है। हरियाणा और पंजाब राज्यों में हरित क्रांति समय के दौरान अनाज के उत्पादन और उत्पादकता में जो उपलब्धियां प्राप्त की गईं वह उनके द्वारा स्थापित फसल सुधार कार्यक्रमों की मजबूत नींव के कारण ही संभव हो सका है। ऐसे महान वैज्ञानिकों और उनके योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहे। वे विश्वविद्यालय में ऑनलाइन माध्यम से आयोजित सुप्रसिद्ध कृषि विज्ञानियों स्वर्गीय राव बहादुर डॉ. रामधन सिंह की याद में आयोजित एक कार्यक्रम में बतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे।

विज्ञानियों को पौधों से भावनात्मक रूप से जुड़ने का आह्वान: मुख्यातिथि ने डा. रामधन सिंह की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि दी। उन्होंने कहा कि विज्ञानियों तथा विद्यार्थियों को उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए और कड़ी मेहनत व लगन के साथ कार्य करते हुए देश को खाद्यान्न तथा पोषण सुरक्षा प्रदान करने में योगदान देना चाहिए।

दुनियाभर में बेहतरीन किस्मों के जनक के रूप में है पहचान : कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि सीमेट एशिया रीजनल रिप्रेजेंटेटिव व बोर्लॉग इंस्टीट्यूट फॉर साउथ एशिया के मैनेजिंग डायरेक्टर डॉ. अरूण कुमार जोशी ने डॉ. रामधन सिंह द्वारा कृषि क्षेत्र में दिए गए अभूतपूर्व योगदान की विस्तृत जानकारी देते हुए उनके द्वारा विकसित की गई विभिन्न किस्मों से अवगत कराया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	28.05.2021	--	--

खाद्यान उत्पादन में अभूतपूर्व योगदान के लिए याद किए जाते हैं स्वर्गीय रामधन सिंह : प्रो. काम्बोज

हिसार, 27 मई (राजकुमार) : स्वर्गीय रॉय बहादुर डॉ. रामधन सिंह द्वारा देश के खाद्यान उत्पादन में अभूतपूर्व योगदान देने के लिए उन्हें आज भी बड़े सम्मान के साथ याद किया जाता है। हरियाणा और पंजाब राज्यों में हरित क्रांति अवधि के दौरान अनाज के उत्पादन और उत्पादकता में जो उपलब्धियां प्राप्त की गईं वह उनके द्वारा स्थापित फसल सुधार कार्यक्रमों की मजबूत नींव के कारण ही संभव हो सका है। ऐसे महान वैज्ञानिकों और उनके योगदान को भुलाया नहीं जा सकता।

ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर वी.आर. काम्बोज ने कहे। ये विश्वविद्यालय में ऑनलाइन माध्यम से आयोजित सुप्रसिद्ध कृषि वैज्ञानिक स्वर्गीय रॉय बहादुर डॉ. रामधन सिंह की याद में आयोजित एक कार्यक्रम में बतौर मुख्यतिथि बोल रहे थे। एक पौध प्रजनन वैज्ञानिक के रूप में उनकी उपलब्धियां बहुत अधिक हैं। उनके द्वारा तैयार की गईं बासमती चावल की 370 किस्म की

बदौलत आज भारत बासमती चावल का सबसे बड़ा निर्यातक है। डॉ. रामधन सिंह ने अपने जीवन में गेहूँ, चावल, जौ तथा दलहनों की 25 ऊँच किस्मों को विकसित किया जिनके परिणामस्वरूप भारतीय उपमहाद्वीप में खाद्यान उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि हुई।



हिसार : कार्यक्रम के दौरान स्वर्गीय रामधन सिंह की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित करते मुख्यातिथि प्रोफेसर वी.आर. काम्बोज एवं अन्य।

वैज्ञानिकों को पौधों से भावनात्मक रूप से जुड़ने का आह्वान : मुख्यातिथि ने डॉ. रामधन सिंह की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि दी तथा कहा कि वैज्ञानिकों तथा विद्यार्थियों को उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए और कड़ी मेहनत व लगन के साथ कार्य करते हुए देश को

खाद्यान तथा पोषण सुरक्षा प्रदान करने में योगदान देना चाहिए। कार्यक्रम के दौरान विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा लिखित एक पुस्तक का भी विमोचन किया गया।

दुनियाभर में बेहतरीन किस्मों के जनक के रूप में डै पहचान : डॉ. अरुण जोशी

कार्यक्रम के विरिष्ठ अतिथि सेमेट एशिया रीजनल डिरेक्टिव व बोसलॉग इंस्टीट्यूट फॉर साइब एशिया के मैनेजिंग डायरेक्टर डॉ. अरुण कुमार जोशी ने डॉ. रामधन सिंह द्वारा कृषि क्षेत्र में दिए गए अभूतपूर्व योगदान की विस्तृत जानकारी देते हुए उनके द्वारा विकसित की गईं विभिन्न किस्मों से अनाज कराया। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता एवं रामधन सिंह बेयर के

कन्वेनर डॉ. ए.के. छत्रवर्धन ने कार्यक्रम के शुभारंभ पर सभी का स्वागत किया और उनकी उपलब्धियों के बारे में जानकारी दी। मंच का संचालन सहायक अधिष्ठाता डॉ. सुरेंद्र कुमार पाहुजा ने किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता, निदेशक, विभागाध्यक्ष सहित विद्यार्थी मौजूद रहे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नभ छोर	27.05.2021	--	--

डॉ. रामधन सिंह ने विभिन्न फसलों की नई किस्में इजाद कर अलग पहचान बनाई: कुलपति



दिसंबर 22 नई किस्में

संशोधन एवं बायोटेक डॉ. रामधन सिंह द्वारा देश के कृषकान् उपभोक्ता में अनुसूच्युं बीजधान देने के लिए उन्हें अलग भी नई पहचान के साथ पत्र किया जाता है। हरियाणा और पंजाब राज्यों में हरिया कृषि अकादेमी के दौरान अकादेमी के उपभोक्ता और उपभोक्ताओं में जो उपभोक्ताओं को जो नई नई किस्में द्वारा नवीन फसल कृषकान् कान्कनकी को फलवृत्त नीच के कारण ही संभव हो सका है। ऐसे नए किस्मों और उनके बीजधान को पुराना नहीं जा सकता। वे विभिन्न बीजों द्वारा सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बीरधर बरबोहर ने कहा। वे विश्वविद्यालय में अधिष्ठाता फसल में सुपरिच्यु कृषि वैज्ञानिक राष्ट्रीय एवं बायोटेक डॉ. रामधन सिंह को पत्र में अधिष्ठाता एक कार्यक्रम में कति सुपरिच्यु कृषि क्षेत्र रहे थे। उन्होंने कहा कि संशोधन विभाग पीछा में जवा लेने करने इस नए वैज्ञानिक ने भारत ही नहीं दुनिया के लिए विभिन्न फसलों की नई किस्में इजाद कर अलग पहचान कराई। एक बीज इजाद वैज्ञानिक के रूप में उनकी उपभोक्ताओं बहुत

अधिक है। उनके द्वारा किया जो नई फसल की 370 किस्म की पहचान अलग अलग कान्कनकी फसल का सबसे बहुत विशेषता है। डॉ. रामधन सिंह ने अपने जीवन में गेहूँ, पालक, जो तथा दालों की 25 नए किस्मों की विकसित किया जिनके परिणामस्वरूप भारतीय उपमहाद्वीप में कृषकान् उपभोक्ता में अनुसूच्युं वृद्धि हुई। सुपरिच्यु ने डॉ. रामधन सिंह को हरियाणा का पुरा अधिष्ठाता करने हुए नई अधिष्ठाता ही तथा कहा कि वैज्ञानिकों तथा विश्वविद्यालय को उनके द्वारा नई अधिष्ठाता और कति वैज्ञानिक व संशोधन के साथ कार्य करते हुए देश को कृषकान् तथा पौषण सुखा प्रदान करने में योगदान देना अधिष्ठाता उनकी पत्र और कुछ वैज्ञानिकों के द्वारा नवीन के रूप में नवीनियों के लिए विश्वविद्यालय में रामधन सिंह पत्र की पहचान भी की गई है। उन्होंने कुछ वैज्ञानिकों से आग्रह किया कि वे बीजों से आनुवंशिक रूप में सुपरिच्यु उनकी देखभाल करें और नए काली बीजों व फलवृत्त के कारण उन्हें काले रंग बदलाव का कार्य भी वे अधिष्ठाता करें। बीजों में जल होती

है, लेकिन वे बीजों को जल सोन नहीं सकते। इसलिए आनुवंशिक रूप में सुपरिच्यु उनकी हर नवीनियों का पत्र रखते हुए नई किस्मों को इजाद करें। कार्यक्रम के दौरान विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न एक पुराना का भी विवेक्षण किया गया। कार्यक्रम के विशेष अधिष्ठाता सीमा एनिका वैज्ञानिक प्रोफेसर व वैज्ञानिक प्रोफेसर और अलग एनिका के वैज्ञानिक सुपरिच्यु डॉ. अलग कृषकान् बीजों ने डॉ. रामधन सिंह द्वारा कृषि क्षेत्र में दिए गए अनुसूच्युं बीजधान की जानकारी देने हुए उनके द्वारा विकसित की गई विभिन्न किस्मों में अलग पहचान कराया। अनुसूच्युं विवेक्षण डॉ. एनिका सुपरिच्यु ने बताया कि डॉ. रामधन सिंह कृषि अनुसूच्युं नए विवेक्षण की गई नवीनियों के मतलब रहे। इसके अलावा वह विश्वविद्यालय प्रोफेसर बीरधर बरबोहर के मतलब भी रहे। कृषि विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता एवं रामधन सिंह पत्र के कान्कनकी डॉ. एनिका सुपरिच्यु ने उनकी उपभोक्ताओं के खाते में जानकारी दी। पत्र संशोधन सुपरिच्यु अधिष्ठाता डॉ. सुदि कृषकान् प्रदान ने किया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

दिनांक

पृष्ठ संख्या

कॉलम

पांच बजे

27.05.2021

--

--

हकृति में सुप्रसिद्ध कृषि वैज्ञानिक स्वर्गीय रॉब बहादुर डॉ. रामधन सिंह की याद में कार्यक्रम का आयोजन

देश में हरित क्रांति के अग्रदूत के रूप में है स्व. रामधन सिंह की पहचान : प्रो. काम्बोज

घांट बने खुल

हिसार। स्वर्गीय रॉब बहादुर डॉ. रामधन सिंह द्वारा देश के अग्रज उपकरण में अग्रदूत घोषित देने के लिए उन्हें आज भी बड़े सम्मान के साथ याद किया जा रहा है। हरियाणा और भारत दोनों में ही उनका असीम योगदान के दौरान भारत के उपकरण और उपकरणों में जो उपस्थितियाँ प्राप्त की गईं हैं, उनके द्वारा संचालित प्रमुख सुधार कार्यक्रमों की नगदुर-नीम के कारण ही संभव हो सके हैं। ऐसे महान वैज्ञानिकों और उनके परिवार को श्रद्धांजलि देने का मौक़ा वे विशाल सैन्यी सभा में हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. काम्बोज जी और कार्यपालक प्रो. वी. विमलकिशोरन के अध्यक्षता में आयोजित सुश्रीवर्ण कृषि वैज्ञानिक स्वर्गीय रॉब बहादुर डॉ. रामधन सिंह की याद में आयोजित एक कार्यक्रम में सही मुहूर्तों में पूरा हो रहा है। उन्होंने कहा कि स्वर्गीय विद्वान प्रो. रामधन सिंह ने अपने जीवन में बहुत सारा समय अपने देश के किसानों के लिए बिना सोच-विचार के बिना ही दे दिया था। उन्होंने कहा कि स्वर्गीय विद्वान प्रो. रामधन सिंह ने अपने जीवन में बहुत सारा समय अपने देश के किसानों के लिए बिना सोच-विचार के बिना ही दे दिया था। उन्होंने कहा कि स्वर्गीय विद्वान प्रो. रामधन सिंह ने अपने जीवन में बहुत सारा समय अपने देश के किसानों के लिए बिना सोच-विचार के बिना ही दे दिया था।



एक सैन्य सभा में स्वर्गीय डॉ. रामधन सिंह की याद में आयोजित कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में प्रो. काम्बोज जी और प्रो. विमलकिशोरन जी का विशेष योगदान था। कार्यक्रम में प्रो. काम्बोज जी ने स्वर्गीय डॉ. रामधन सिंह की याद में आयोजित कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में प्रो. काम्बोज जी ने स्वर्गीय डॉ. रामधन सिंह की याद में आयोजित कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

सुश्रीवर्ण ने डॉ. रामधन सिंह की जीवन का सारा योगदान को याद किया। उन्होंने कहा कि स्वर्गीय डॉ. रामधन सिंह की याद में आयोजित कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में प्रो. काम्बोज जी ने स्वर्गीय डॉ. रामधन सिंह की याद में आयोजित कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

दिखाया और उनके जीवन के योगदान को याद किया। उन्होंने कहा कि स्वर्गीय डॉ. रामधन सिंह की याद में आयोजित कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में प्रो. काम्बोज जी ने स्वर्गीय डॉ. रामधन सिंह की याद में आयोजित कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कहा कि डॉ. रामधन सिंह की जीवनी में विशेष योगदान को याद किया। उन्होंने कहा कि स्वर्गीय डॉ. रामधन सिंह की याद में आयोजित कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में प्रो. काम्बोज जी ने स्वर्गीय डॉ. रामधन सिंह की याद में आयोजित कार्यक्रम का आयोजन किया गया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी प्लस	27.05.2021	--	--

खाद्यान उत्पादन में अभूतपूर्व योगदान के लिए याद किए जाते हैं स्वर्गीय रामधन सिंह

सिटी प्लस न्यूज़, हिसार। स्वर्गीय डॉ. रामधन सिंह द्वारा देश के खाद्यान उत्पादन में अभूतपूर्व योगदान देने के लिए उन्हें आज भी बड़े सम्मान के साथ याद किया जा रहा है। हरियाणा और पंजाब राज्यों में हरित क्रांति अर्थात् केरीयन अनाज के उत्पादन और उत्पादकता में जो उपलब्धियाँ प्राप्त की गईं वह उनके द्वारा स्वर्गीय परमल सुधन कार्ष्णिनी की महत्पूर्ण सेवा के कारण ही संभव हो सकी हैं। ऐसे महान वैज्ञानिकों और उनके योगदान को पूज्यता नहीं जा सकता। ये विचार हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. जी. आर. बाम्बोज ने कहे। ये अभूतपूर्व योगदान को अर्पणित कृषि वैज्ञानिक स्वर्गीय डॉ. रामधन सिंह की याद में अर्पणित एक कार्यक्रम में बड़ी सुश्रुतिपूर्वक श्रेणी में थे। उन्होंने कहा कि एक कौशल प्रदान वैज्ञानिक के रूप में उनकी उपलब्धियाँ बहुत अधिक हैं। उनके द्वारा तैयार की गई ब्यागमरी पंचक की 370 किगम

की बटैला आज भारत का सबसे बड़ा पंचक का सबसे बड़ा निर्माता है। डॉ. रामधन सिंह ने अपने जीवन में गेहूँ पंचक, जो एक टाइटने की 25 ऊँची किगम की निर्माता किया।

उन्होंने बताया कि देशी गेहूँ की किगम जिसे खाने में सभी सरलित बना जा रहा है, सी-306 के पंचक भी डॉ. रामधन सिंह ही हैं। इसके अलावा संसार में महत्पूर्ण ब्यागमरी पंचक 370 और बोस-349 भी उनकी ही देन है। उन्होंने कहा कि डॉ. रामधन सिंह की दुनियाभर में वैज्ञानिक विभिन्न पंचक की किगमों निर्माता करने वाले वैज्ञानिक के रूप में अलग पहचान है। उन्होंने धरियन में जाने वाली विभिन्न सुश्रुतिपूर्वक के बारे में अलग बतवाते हुए वैज्ञानिकों से सर्वश्रेष्ठ करने का आह्वान किया। इस अवसर पर डॉ. एम.के. महाराज, अतिथि, निर्देशक, विभागाध्यक्ष सहित विद्यार्थी मौजूद रहे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हिंदुस्तान समाचार	27.05.2021	--	--

संक्षेप



विषय: वास्तव्य उपकरणों से एवं, वास्तव्य विद्युत का उपयोग करने वाला : कुशलता से जीवित रहना



उपर्युक्त में उपरोक्त के रूप में विद्युत-सुरक्षा के उपकरण

विद्युत, जो हमें जीवन में अत्यंत उपयोगी है, लेकिन अत्यंत खतरनाक भी है। इसलिए इसे सुरक्षित रूप से उपयोग करना चाहिए। वास्तव्य उपकरणों से एवं, वास्तव्य विद्युत का उपयोग करने वाले : कुशलता से जीवित रहना। वास्तव्य उपकरणों से एवं, वास्तव्य विद्युत का उपयोग करने वाले : कुशलता से जीवित रहना। वास्तव्य उपकरणों से एवं, वास्तव्य विद्युत का उपयोग करने वाले : कुशलता से जीवित रहना।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

दिनांक

पृष्ठ संख्या

कॉलम

पल पल न्युज

27.05.2021

--

--

खाद्यान उत्पादन में अभूतपूर्व योगदान के लिए याद किए जाते हैं स्वर्गीय रामधन सिंह : प्रो. काम्बोज

पल पल न्युज: हिसार, 27 मई। स्वर्गीय चौधरी चरण सिंह द्वारा देश के खाद्यान उत्पादन में अभूतपूर्व योगदान देने के लिए उन्हें आज भी बड़े सम्मान के साथ याद किया जाता है। हरियाणा और पंजाब राज्यों में हरित क्रांति आंदोलन के दौरान अनाज के उत्पादन और उपजदकाल में जो उपलब्धियाँ प्राप्त की गईं वह उनके द्वारा स्थापित फसल सुधार कार्यक्रमों की सज्जद नींव के कारण ही संभव हो सका है। ऐसे महान वैज्ञानिकों और उनके योगदान को भूलना नहीं जा सकता। वे विश्व चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर श्री अर. काम्बोज ने कहे। वे विश्वविद्यालय में अंतराष्ट्रीय सम्मान से अवार्डित सुप्रसिद्ध कृषि वैज्ञानिक स्वर्गीय चौधरी चरण सिंह रामधन सिंह की याद में अवार्डित



एक कार्यक्रम में श्री गुरुजीतिथि बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि सशक्त किसान परिवार में जन्म लेने वाले इस महान वैज्ञानिक ने भारत ही नहीं दुनिया के लिए विशिष्ट फसलों की नई किस्में इजाजत कर अलग पहचान बनाई। एक पीढ़े प्रथम वैज्ञानिक के रूप में उनकी उपलब्धियाँ बहुत अधिक हैं। उनके द्वारा तैयार की गई खासगरी चावल की 370 किस्म की बढ़तीला आज भारत खासगरी चावल का सबसे बड़ा निर्यातक है। डॉ. रामधन सिंह ने अपने जीवन में

कुल, चावल, जौ तथा दालों की 25 जल किस्मों को विकसित किया जिनके परिणामस्वरूप भारतीय उपमहाद्वीप में खाद्यान उत्पादन में अभूतपूर्व बृद्धि हुई। **वैज्ञानिकों की पीढ़ी से भव्यतावक रूप से जुड़ने का आह्वान :** गुरुजीतिथि ने डॉ. रामधन सिंह की प्रतिभा पर पुष्प अर्पित करते हुए उन्हें अष्टांगलि दे तथा कहा कि वैज्ञानिकों तथा विद्यार्थियों को इससे प्रेरण लेनी चाहिए और कड़ी मेहनत व लगन के साथ कार्य करते हुए देश को

खाद्यान तथा पोषण सुरक्षा प्रदान करने में योगदान देना चाहिए। उनकी याद और युवा वैज्ञानिकों के प्रेरण स्रोत के रूप में मार्गदर्शन के लिए विश्वविद्यालय में रामधन सिंह फार्म की स्थापना भी की गई है।

उन्होंने युवा वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे पीढ़ी से भव्यतावक रूप से जुड़ते उनकी देखभाल करें और उनमें बढ़ती मेहनत व उत्साह के अनुसार अपने काले हर कदम का खरीबी से अध्ययन करें। पीढ़ी में अलग होती है, लेकिन वे इसमें की तरह बोल नहीं सकते। इसलिए भव्यतावक रूप से जुड़ते उनकी हर कीर्तिधि पर नजर रखते हुए नई किस्मों को इजाजत करें। कार्यक्रम के दौरान विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा निरचित एक पुस्तक का भी विमोचन किया गया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हैलो हिसार न्यूज	28.05.2021	--	--

खाद्यान उत्पादन में अभूतपूर्व योगदान के लिए याद किए जाते हैं स्वर्गीय रामधन सिंह : प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज

हिसार: स्वर्गीय राव बहादुर डॉ. रामधन सिंह द्वारा देश के खाद्यान उत्पादन में अभूतपूर्व योगदान देने के लिए उन्हें आज भी बड़े सम्मान के साथ याद किया जाता है। हरियाणा और पंजाब राज्यों में हरित क्रांति अवधि के दौरान अनाज के उत्पादन और उत्पादकता में जो उपलब्धियां प्राप्त की गईं वह उनके द्वारा स्थापित फसल सुधार कार्यक्रमों की मजबूत नींव के कारण ही संभव हो सका है। ऐसे महान वैज्ञानिकों और उनके योगदान की भुलाया नहीं जा सकता। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने कहे। ये विश्वविद्यालय में ऑनलाइन माध्यम से आयोजित सुप्रसिद्ध



कृषि वैज्ञानिक स्वर्गीय राव बहादुर डॉ. रामधन सिंह की याद में आयोजित एक कार्यक्रम में वतीर मुख्यातिथि बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि साधारण किसान परिवार में जन्म लेने वाले इस महान वैज्ञानिक ने भारत ही नहीं दुनिया के लिए विभिन्न फसलों की नई किस्में इजाद कर अलग पहचान बनाई। एक पीढ़े प्रजनन वैज्ञानिक के रूप में उनकी

उपलब्धियां बहुत अधिक हैं। उनके द्वारा तैयार की गई बासमती चावल की 370 किस्म की बदौलत आज भारत बासमती चावल का सबसे बड़ा निर्यातक है। डॉ. रामधन सिंह ने अपने जीवन में गेहूँ, चावल, जौ तथा दलहनों की 25 ऊत किस्मों की विकसित किया जिनके परिणामस्वरूप भारतीय उपमहाद्वीप में खाद्यान उत्पादन में

देश में हरित क्रांति के अग्रदूत के रूप में है पहचान

अभूतपूर्व वृद्धि हुई। वैज्ञानिकों को पीढ़ों से भावनात्मक रूप से नुक़ने का आख्यान मुख्यातिथि ने डॉ. रामधन सिंह की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि दी तथा कहा कि वैज्ञानिकों तथा विद्यार्थियों को उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए और कड़ी मेहनत व लगन के साथ कार्य करते हुए देश को खाद्यान तथा पोषण सुरक्षा प्रदान करने में योगदान देना चाहिए। उनकी याद और युवा वैज्ञानिकों के प्रेरणा स्रोत के रूप में मार्गदर्शन के लिए विश्वविद्यालय में रामधन सिंह फार्म की स्थापना भी की गई है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज	27.05.2021	--	--

समस्त हरियाणा

बुधवार, 27 मई, 2021

2

खाद्यान उत्पादन में अभूतपूर्व योगदान के लिए याद किए जाते हैं स्वर्गीय रामधन सिंह : प्रो. बीआर काम्बोज

विश्व के वैज्ञानिकों की लिखित पुस्तक का किया विमोचन

समस्त हरियाणा न्यूज
हिसार। स्वर्गीय रामधन सिंह डॉ. रामधन सिंह द्वारा देश के खाद्यान उत्पादन में अभूतपूर्व योगदान देने के लिए उन्हें आज भी बहु सम्मान के साथ याद किया जा रहा है। हरियाणा और पंजाब राज्यों में हरित क्रांति लक्ष्मी के दौरान अनाज के उत्पादन और उत्पादकता में जो क्रांतिकारी उपाय की गईं वह उनके द्वारा स्थापित करना सुझाव कार्यक्रमों की मजबूत नींव के बरतने ही संभव हो सका है। ऐसे महान वैज्ञानिकों और उनके योगदान को पुनः याद कर सकते हैं। विचार-शीर्षक 'समस्त हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सुलभी संस्करण खोजा कार्यक्रम' में डॉ. विमोचनारण्य में अतिथित मानव के अमेरिकी एग्रीकल्चर कृषि वैज्ञानिक स्वर्गीय रामधन सिंह डॉ. रामधन सिंह की याद में अमेरिकी एक कार्यक्रम में डॉ. प्रो.



दुसरादिने कोर रहे थे। उन्होंने कहा कि उत्पादन विज्ञान परिवार में जन्म लेने वाले एक महान वैज्ञानिक ने भारत ही नहीं दुनिया के लिए विश्व क्रांतियों की नई दिशाएं प्रस्तुत कर अनाज उत्पादन बढ़ाई। एक हीच प्रथम वैज्ञानिक के रूप में उनकी अत्यंतमहत्त्वपूर्ण अतिथि है। उनके द्वारा किया की नई तकनीकें भारत की 370 किसान को बढ़ावा देकर अनाज उत्पादन का सबसे बड़ा विज्ञानिक है।

पीछी से भावनात्मक रूप से जुड़ने का आह्वान

दुसरादिने ने डॉ. रामधन सिंह की अतिथि पर एक अधिष्ठित करते हुए उन्हें

कहाकिनी ही एक बात कि वैज्ञानिकों को विश्वविद्यालयों की अपने देशों लगे रहनी और कड़ी मेहनत में भारत के साथ कार्य करते हुए देश की खाद्यान उत्पादन सुझाव प्रदान करने में योगदान देना चाहिए।

उन्होंने कहा कि एक वैज्ञानिकों के देशों लगे के रूप में कार्यक्रमों के लिए विश्वविद्यालय में रामधन सिंह जन्म को स्मरण की की गई है। उन्होंने एक वैज्ञानिकों में आह्वान किया कि वे पीछी से भावनात्मक रूप से जुड़कर उनके देशों लगे की और कड़ी मेहनत में भारत के अनाज देने वाले हो सकते हैं। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों को अपने देशों लगे रहनी और कड़ी मेहनत में भारत के साथ कार्य करते हुए देश की खाद्यान उत्पादन सुझाव प्रदान करने में योगदान देना चाहिए।

दुनिया में बेहतरीन किस्मों के जनक के रूप में है पहचान : डॉ. अरूण जोशी

कार्यक्रम के अतिथि अमेरिकी एग्रीकल्चर कृषि वैज्ञानिक प्रो. अरूण जोशी ने डॉ. रामधन सिंह द्वारा कृषि क्षेत्र में दिए गए अभूतपूर्व योगदान को निरंतर यादगार करते हुए उनके द्वारा विश्वविद्यालय की नई लिखित किस्मों के अनावरण किया। उन्होंने बताया कि देशी पैतृ की किस्मों को खाने में सबसे स्थायित्व प्राप्त करा है, जो 300 के अनाज भी डॉ. रामधन सिंह ही हैं। उनके अनाज उत्पादन में मजबूत मासूमों कावला 370 और डीएन- 349 को उनकी ही देना है। उन्होंने कहा कि डॉ. रामधन सिंह की दुनियाभर में अनेकाने लिखित क्रांतियों की किस्मों विकसित करने वाले वैज्ञानिक के रूप में अनाज उत्पादन है। उन्होंने बताया कि उनके द्वारा लिखित पुस्तिकाओं के बारे में अनाज उत्पादन हुए वैज्ञानिकों में अनेक उपाय का आह्वान किया। अग्रोबिजनेस निदेशक डॉ. राज के, अनाज में बताया कि वे 30 अंश 1977 को इस क्षेत्र को अतिथित करा था लेकिन सबसे शक्ति करने के लिए अनाज उत्पादन बढ़ाए गए। उन्होंने कहा कि डॉ. रामधन सिंह कृषि अनुसंधान एवं विकास की नई परियोजनाओं के अग्रणी रहे। उनके अनाज का विश्वविद्यालय अनाज बोर्ड के अग्रणी भी रहे। कृषि विश्वविद्यालय के अतिथित एवं रामधन सिंह के रूप के कार्यक्रम डॉ. ए.के. शर्मा ने कार्यक्रम के शुभारंभ पर सभी का स्वागत किया और उनकी अतिथिओं के बारे में जानकारी दी। राम का संस्थान अनाज अतिथित डॉ. सुदि कृष्ण शर्मा ने किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के अतिथित, निदेशक, विश्वविद्यालय सहायक निदेशक और डॉ.

नों लगे। दुसरील भावनात्मक रूप से देशों विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा सुझाव उनके ही परियोजनाओं पर नजर रखें। लिखित एक पुस्तक का भी विमोचन हुए नई किस्मों को प्रस्तुत की। कार्यक्रम के अतिथि रामधन सिंह